दैनिक जागरण
पूर्वी दिल्ली
18 अक्टूबर 2023

एटीएल का उद्देश्य विद्यार्थियों को रचनात्मक बनाना है : मालती गोयल

वि, पूर्वी दिल्ली : प्रीत विहार स्थित यूनिवर्सल पब्लिक स्कूल में अटल टिंकरिंग लैब (एटीएल) प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। प्रदर्शनी के माध्यम से विद्यार्थियों को रचनात्मकता, सृजनात्मकता, कल्पना और नवीनता को बढ़ावा देने और रटने की प्रक्रिया से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया।

विद्यार्थियों ने रोबोटिक्स, सेंसर तकनीक, रोलर ट्रैकर और कई अन्य तकनीकों पर आधारित माडल का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि के रूप में शामिल जलवायु परिवर्तन अनुसंधान संस्थान की अध्यक्ष मालती गोयल ने कहा कि एटीएल का उद्देश्य युवाओं को ऐसा कौशल प्रदान करना और उन्हें उस प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान करना है, जो उन्हें समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम बनाएगी। प्रधानाचार्या माया गुप्ता ने कहा अपने अंदर जिज्ञासा विकसित करें। इस मौके पर शिक्षाविद रेणु मांगलिक व एटीएल प्रभारी उमेश कुमारी मौजूद रही।

यूनिवर्सल पब्लिक स्कूल में आयोजित अटल टिंकरिंग लैब प्रदर्शनी का अवलोकन करतीं जलवायु परिवर्तन अनुसंधान संस्थान दिल्ली की अध्यक्ष डा. मालती गोयल(बाएं से दूसरीं) व शिक्षाविद रेणु मांगलिक ● सौजन्य- स्कूल

First satellite seminar held at Puthuvype

The first satellite seminar of Swasraya Bharat was held at the Centre for Marine Living Resources & Ecology (CMLRE), Puthuvype, on Saturday.

Published: 22nd September 2019 06:16 AM | Last Updated: 22nd September 2019 06:16 AM

By Express News Service

KOCHI: The first satellite seminar of Swasraya Bharat was held at the Centre for Marine Living Resources & Ecology (CMLRE), Puthuvype, on Saturday.

The seminar with the theme 'Sustainable Development Goal-14 (Life under water)' was organised as part of Kerala Science Fest 2019, jointly by Swadeshi Science Movement and Ministry of Earth Sciences -CMLRE. Climate Change Research Institute president and CEO Dr Malti Goel spoke on the theme and SDG 13 (climate change).

Latest

- Karnataka govt's appointment of 'ineligible' officer as MD to TSCL raises eyebrows
- Rohit Sharma equals MS Dhoni's record during third South Africa T20I
- Chhattisgarh government writes to Centre for guidelines to rehabilitate internally displaced Bastar tribals

Students visit 'Sagar Sampada', interact with scientists

'Awareness is being created on maintaining cleanliness'

KARWAR, DHNS

Students of various schools and colleges visited the state-of-the-art Fishery Research Vessel 'FORV Sagar Sampada' which was anchored in Karwar port on Saturday.

As part of 'Swachhata Hi Seva' campaign of the Central government, the Ministry of Earth Sciences Centre for Marine Living Resources and Ecology (CMLRE) is organising programmes in various ports. The vessel will be in Karwar till 12:00 noon on September 29 (Sunday).

The programmes are being held before October 2 to create awareness about cleanliness.

Students of Kendriya Vidyalaya at Araga and Department of Studies in Marine Biology, Kodibag visited the research vessel and held interactions with the scientists.

Speaking on the occasion, Physical Oceanographer Dr Smita said, in terms to create awareness about the effects of the use of plastic on the aquatic animals living in sea and coastal region, a series of programmes are being held under the Swachhta Hi Seva campaign.

The campaign which was launched in Gujarat has now reached Karwar. The last programme will be held at Cochin on October 2, she added.

Cochin CMLRE Scientist M Subramaniyan and scientist Hashim were present on the occasion and provided information to the students.

Commissioned in 1984, the vessel has been the backbone of R&D efforts on Marine Living Resources including deep-sea fishery surveys. The Vessel is ice-strengthened to support India's scientific programme in the Southern Ocean.

Students engage in observing things through a telescope set up on FORV Sagar Sampada in Karwar on Saturday. DH PHOTO

STATE-OF-THE-ART FISHERY RESEARCH VESSEL

Sagar Sampada vessel to arrive in Karwar today

DEVARAJ NAIK
KARWAR, DHNS

The state-of-the-art Fishery Research Vessel 'FORV Sagar Sampada' will anchor in Karwar port on Saturday and there are chances that students would be allowed to visit it during the period.

As part of Swachhata Hi Seva campaign, the Ministry of Earth Sciences has organised a one-day programme at Centre for Marine Living Resources and Ecology (CMLRE) port.

The vessel has come to Karwar to take part in the programme. Such programmes are being held before October 2 to create awareness on cleanliness.

Cochin CMLRE Scientist M Subramanian will be present on the occasion and will provide information to the people. There are chances that people can visit the vessel from 10:00 am to 4:30 pm.

Commissioned in 1984, the vessel has been the backbone of R&D efforts on Marine Living Resources including deep-sea fishery surveys. The Vessel is ice-strengthened to support India's scientific programme in the Southern Ocean.

Till now, it has completed around 370 scientific cruises in the Arabian Sea, Bay of Bengal including one cruise to the Indian Ocean sector of the Southern Ocean.

The 72-meter long multipurpose fishery oceanographic vessel constructed at Dennebrog Shipyard Ltd, Denmark can accommodate a team of 59, which include 34 crew members of the Shipping Corporation of India and 25 scientific/technicians.

The vessel is equipped with Fleet 77 for communication purpose, satellite navigator for navigation, Helipad for emergency landing of a helicopter and a medical room with qualified doctors.

Port officer Suresh Shetty also confirmed the arrival of Sagar Sampada vessel and said that students may be given an opportunity to visit it.

The Fishery Research Vessel Sagar Sampada.

Meteorology in Schools

अमर उजाला 29 दिसम्बर 2003

पूर्वानुमान

प्रदेश के सौ स्थानों पर अंतरिक्ष विज्ञान की वेधशालाएं बनेंगी

अब मौसम की सटीक जानकारी मुश्किल नहीं

स्टाफ रिपोर्टर

रुड़की। उत्तरांचल की वादियों के मौसम का हाल जानने को यहां के मौसम विभाग को और अधिक सशक्त बनाया जा रहा है। इसके लिए पूरे प्रदेश के करीब 100 स्थानों पर अंतरिक्ष विज्ञान की वेधशालाओं की स्थापना की जाएगी। बताया जाता है कि उत्तरांचल पहला राज्य है, जहां इन वेधशालाओं को वहां के विद्यालयों में स्थापित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि उत्तर तथा पश्चिमोत्तर भारत में पिछले कुछ समय से मौसम के विषय में जो भविष्यवाणियां होती रही हैं, वे पूरी तरह से सही नहीं उतरी हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार उत्तर भारत में कोहरे के जबरदस्त प्रकोप का कारण पश्चिमी विक्षोभ है। जिससे उत्तर तथा पश्चिमोत्तर भारत में बारिश हुई और नमी के कारण कोहरे का प्रकोप हुआ। वैज्ञानिकों का कहना है कि उत्तरांचल में पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण हर स्थानों के मौसम के बारे में जानकारी मिलना मुश्किल होता है। ऐसे में वेधशालाओं के स्थापित हो जाने से आने वाले मौसम में बदलाव का आसानी से पता लगाया जा सकेगा। आईआईटी के हाइड्रोलाजी विभाग के डा.एन. के. गोयल का कहना है कि वेधशालाओं को विद्यालयों में लगाने का एक उद्देश्य यह भी है कि इसके माध्यम से छात्रों को भी मौसम के बारे में जानकारी दी जा सकेगा। जानकारी के अनुसार राजकीय इंटर कालेज के अलावा पूरे प्रदेश के अब तक दस स्थानों पर वेधशालाओं को स्थापित किया जा चुका है। इसकी स्थापना भारत सरकार के विज्ञान एवं तकनीकी विभाग (डीएसटी) द्वारा की गई है। डा.गोयल ने बताया कि उत्तरांचल के जिन बीस स्कूलों में वेधशालाओं को लगाने की प्रक्रिया शुरू की गई है उसमें नवोदय विद्यालय पोखाल टिहरी, जीआईसी श्रीनगर पौड़ी, जीआईसी अगस्त्यमुनि रुद्रप्रयाग, जीआईसी शंतिपुरी ऊधमसिंह नगर, जीआईसी धनकपुर चंपावत, जीआईसी अल्मोड़ा, जीआईसी पिथौरागढ़, जीआईसी नैनीताल, जीआईसी चिन्याली सोल उत्तरकाशी, जीआईसी कोटद्वार, जीआईसी नरेंद्रनगर टिहरी, जीआईसी ओखीमठ टिहरी, जीआईसी ध्यालापुर, जीआईसी दीदीहाट पिथौरागढ़, जीआईसी लोहाघाट चंपावत, जीआईसी कोसानी बागेश्वर, आर.एस.कालेज मसूरी तथा जीआईसी ओखलनंदा नैनीताल आदि शामिल हैं। इनमें से जीआईसी पिथौरागढ़ में यह प्रक्रिया पूरी हो चुकी है।

पिछले दिनों जीआईसी कोटद्वार में वेधशाला के लगाए जाने की प्रक्रिया के दौरान निरीक्षण को गए डा. गोयल ने बताया कि पहाड़ों में बिना वेधशालाओं की स्थापना के मौसम के उतार चढ़ाव की रीडिंग नहीं ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि अभी प्रदेश के करीब 80 स्कूलों में इन वेधशालाओं को स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अगले वर्ष के मार्च महीने में इन वेधशालाओं के स्थापित करने का कार्य पूरा कर लिया जाएगा।

मौसम के पूर्वानुमान में कारगर होंगी वेधशालाएं

बचदा ने किया रानीखेत में आरक्षण केंद्र का उद्घाटन

अमर उजाला ब्यूरो

अल्मोड़ा। केंद्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री बची सिंह रावत ने कहा है कि कालेजों में स्थापित की जा रही मौसम वेधशालाएं बच्चों में वैज्ञानिक सोच पैदा करने में असरदार साबित होंगी। उन्होंने कहा कि मौसम का पुनर्वानुमान् लगाने में यह प्रयास महत्वपूर्ण साबित होंगे। श्री रावत यहां राजकीय इंटर कालेज में मौसम वेधशाला के अलावा यूप्रोव मौसम केंद्र का साफ्टवेयर के उद्घाटन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

श्री रावत ने कहा कि प्रदेश के शिक्षा विभाग समेत कुल दस शिक्षण संस्थानों के सहयोग से अनेक स्थानों में मौसम विज्ञान केंद्र स्थापित हो रहे हैं। इसमें छोटे स्कूली बच्चों को काम करने का मौका मिलेगा जो कि उनके आगे जीवन में काम आएगा। उन्होंने कालेज के लिए आर्थिक सहयोग देने का वादा किया। श्री रावत ने कहा कि केंद्रीय विज्ञान व तनकीकी मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी इस कालेज के छात्र रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस कार्य में प्रदेश सरकार सहयोग दे रही है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सलाहकार डा. मालती गोयल ने इस परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और इसको मौसम विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। गोविंद बल्लभ पंत पर्यावरण संस्थान के निदेशक डा. उपेंद्र धर ने इस कार्यक्रम को बहुउद्देश्यीय बताते हुए बच्चों से इसमें भागीदारी की अपील की। प्रधानाचार्य नवीन चंद्र पाठक ने स्वागत करते हुए अभिनंदन पत्र प्रस्तुत किया और कालेज की समस्याएं भी रखीं। छात्र किशोर नेगी ने अपने अनुभव बताए। अध्यक्षता कर रहे पूर्व विधायक रघुनाथ सिंह चौहान ने योजना को बहुआयामी बताया और मंत्री के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया। जिला शिक्षा अधिकारी डा. बीआर पनेरू ने सभी का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। संचालन प्रवक्ता बलवंत सिंह बिष्ट ने किया। इस मौके पर मौसम विज्ञान केंद्र देहरादून के निदेशक आनंद कुमार शर्मा, विवेकानंद के डा. जगदीश भट्ट, सह जिला विद्यालय निरीक्षक एचबी चंद, तहसीलदार देवमूर्ति यादव, भाजपा के मनोज वर्मा, अजय वर्मा, डा. मंजुला बिष्ट, शिक्षक, माधो सिंह बिष्ट, नवीन पंत आदि उपस्थित थे। शिक्षकों ने भी श्री रावत को समस्याएं बताई।

रानीखेत। श्री रावत ने यहां रेलवे आवास गृह में कंप्यूटरीकृत आरक्षण केंद्र का उद्घाटन किया और बिंघारीखाल में सड़क के हाटमिक्स प्लांट का भूमि पूजन किया।

श्री रावत ने कहा कि शीघ्र ही मजखाली तक सड़क का आधुनिकीकरण हो जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री सड़क योजना से उत्तरांचल को 60 हजार करोड़ रुपये मिल गया है। नाबार्ड से 200 करोड़ रुपये सड़कों के लिए दिए गए। उन्होंने उत्तरांचल में लोनिवि के परंपरागत काम निजी कंपनियों से कराने के फैसले को गलत बताया और क्षेत्र में सड़कें बनवाने का भरोसा दिलाया। लोनिवि के अधिशासी अभियंता ने बताया कि प्रस्तावित कार्य डेढ़ साल की अवधि में पूरा होगा। अध्यक्षता राजेंद्र बिष्ट और संचालन दीप भगत ने किया।

रेलवे आरक्षण केंद्र का उद्घाटन विरोध प्रदर्शन के चलते देर शाम हो सका। इस अवसर पर भाजपा नेता गिरीश भगत, संजय स्वार, ललित पपनै, रवींद्र जोशी, मदन मेहरा, रविमोहन अग्रवाल, रवींद्र साह, ज्योति मिश्रा, माया बिष्ट, ओम प्रकाश अग्रवाल सहित रेलवे के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

Universal Public School installed metrological lab

Universal Public School, A-Block Preet Vihar, Delhi – 92 has installed metrological laboratory in its school premises under the guidance of Dr. Malti Goyal (Advisor and Scientist 'G' Head of STAC division DST Govt. of India), Dr. H.N.Srivastav and Prof. Das (IIT). The purpose of this laboratory is daily weather observation. Our students take the reading regularly and enjoy it. We recorded the season 's first rain fall on 4th May' 08 which was 1mm and due to this the temperature dipped by 2^0 C . Today's max. temp recorded was 42^0 C. We are thankful to the official of IIT who have given us the privilege of setting up of such a laboratory for the children's benefit.

Interlinked weather stations for 50 schools in NCR

Apeejay School in Sheikh Sarai is the first to acquire one as part of project PROBE for which IIT has also been roped in

NEHA SINHA
NEW DELHI, AUGUST 7

WONDERING when it will rain next in Delhi? Schoolchildren may soon be able to tell you that with a little help from IIT, Delhi. And what's more, information about showers in Model Town can be intimated to schoolchildren in Gurgaon.

Apeejay School, Sheikh Sarai is the first link in the chain of interlinked meteorological stations in 50 schools in the National Capital Region.

The stations are being set up as part of project PROBE (Participation of Youth in Real time Field Observations for the Benefit of Education), for which the Department of Science and Technology has roped in IIT along with other institutes. The Delhi College of Engineering (DCE), School of Planning and Architecture (SPA), JNU and the Indian Meteorological Department in Delhi are the other members.

Students learn to record temperature and humidity with wet and dry bulb thermometers and barometers. *Renuka Puri*

The aim is teach students to become sensitive to weather and its patterns, using simple equipment. This will help them understand concepts like global warming better. A simultaneous aspect is to apprise students on preparedness for environmental disasters.

A teachers training for the project will be conducted by IIT's Centre for Atmospheric Sciences. The short course will include lessons on handling weather-related equipment.

Meanwhile, the Met station at Apeejay, is already a hit with students. "Students from all classes can take a real life lesson in geography," says Apeejay principal Sarita Manuja.

"We have students from all classes coming in to understand how temperature and pressure work in weather changes. The next step will be to incorporate more sophisticated equipment with the IIT's help," says Manuja.

"On days when humidity levels are above 96 per cent, we know it's going to rain. We can give our forecast even before the Met department," says a standard VII student of the school.

With the help of wet and dry bulb thermometers and barometers, students are learning to observe temperature and humidity, record this information and how to then uncode it.

Principal investigators from technical resource centres in JNU and DCE are to help out with the project. These experts will help formulate the next phases of the programme.

रुड़की जागरण

अप्रैल 17, 2003

17 अप्रैल, 2003 दैनिक जागरण देहरादून

नौनिहाल थामेंगे मौसम विज्ञान की नब्ज

देश की पहली मौसम वेधशाला का गौरव रुड़की को ■ विभिन्न यंत्रों से मिल रहे हैं मौसम संबंधी आंकड़े

पारुल शर्मा, रुड़की

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के महत्वाकांक्षी परियोजना 'यू-प्रोब' के तहत नगर के राजकीय इंटर कालेज स्थित पहली मौसम वेधशाला सफलतापूर्वक लगभग तीन माह से कार्य कर रही है। मंत्रालय ने मौसम संबंधी आंकड़े एकत्र करने के लिए इसमें स्कूल के युवाओं की भागीदारी की अनोखी पहल की है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) ने अपनी अंतरक्षेत्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी सलाहकार समिति के अधीन फील्ड डाटा के अर्जन, सृजन, प्रयोग और प्रसार में विद्यालयों के युवाओं की भागीदारी पर एक योजना आरंभ की है। 'शिक्षा को लाभान्वित करने के लिए रियल टाइम, फील्ड ऑब्जर्वेशन में युवाओं की भागीदारी' (प्रोब) नामक कार्यक्रम का उद्देश्य विज्ञान शिक्षा को रुचिपूर्ण और उपयोगी बनाना है। पूरे देश में लगभग दस हजार विद्यालयों में इस कार्यक्रम को कार्यान्वित करने पर विचार किया गया है। पायलेट अवधि में एक पायलेट परीक्षण उत्तरांचल के सौ विद्यालयों में आरंभ कर दिया गया है। 'यू-प्रोब' नामक इस कार्यक्रम का विषय पर्वतीय मौसम विज्ञान है। इस परियोजना में प्रदेश के पांच विश्वविद्यालयों को नोडल केंद्र बनाकर इन्हें समीपवर्ती जिलों में विभिन्न विद्यालयों से जोड़ा जाने की योजना है। इनमें गोविंद वल्लभ पंत कृषि व प्रौद्योगिकी विवि, पंतनगर, कुमाऊं विवि नैनीताल, विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान अल्मोड़ा, एचएनबी गढ़वाल विवि श्रीनगर व भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) रुड़की शामिल है।

■ इस उपकरण से अब सीधे दिल्ली भेजे जाएंगे मौसम संबंधी आंकड़े, जीआईसी स्थित मौसम वेधशाला में लगे दो मुख्य मौसम संबंधी यंत्र। जागरण

प्रदेश में यू-प्रोब के आरंभ के साथ परीक्षण के तौर पर ही पहले दस विद्यालयों को लिया गया। राजकीय इंटर कालेज, रुड़की भी इन्हीं में से एक है। इस कालेज में 15 जनवरी को मौसम वेधशाला (मैट्रोलॉजिकल ऑब्जर्वेरी) इंस्टॉल की गई और 25 जनवरी से इसने कार्य करना भी शुरू कर दिया। हालांकि इस परियोजना की अन्य वेधशाला का विधिवत उद्घाटन गत 3-4 अप्रैल को पिथौरागढ़ में हुआ है लेकिन प्रायोगिक तौर पर रुड़की की वेधशाला ने पहले कार्य प्रारंभ कर दिया था। इस वेधशाला से रोजाना समस्त आंकड़े एकत्र कर आईआईटी रुड़की के जलविज्ञान विभाग को भेजा जाता है जहां से यह आंकड़ें दिल्ली भेजे जाते हैं। विभाग में इस परियोजना की देखरेख कर रहे प्रो.एन.के. गोयल ने बताया कि इसमें संस्थान का कार्य स्कूलों के कार्यों की मॉनीटरिंग करना व आंकड़ों का आंकलन करने का है।

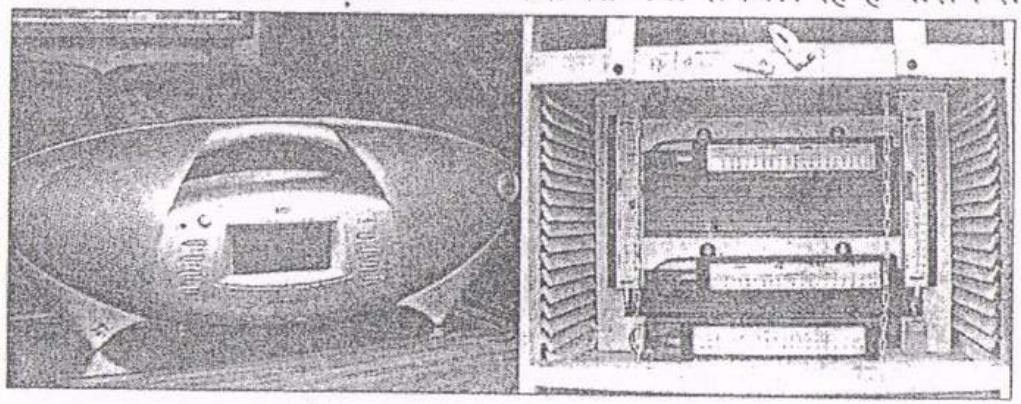

राजकीय इंटर कालेज के प्रधानाचार्य आनंद भारद्वाज ने बताया कि इस वेधशाला में दस किस्म के आंकड़े एकत्र किए जाते हैं। न्यूनतम व अधिकतम तापमान, आर्द्रता में ड्राई बल्ब, वेट बल्ब, सापेक्ष आर्द्रता, वायु की दिशा व गति, बादल के प्रकार और मात्रा और वर्षा। स्कूल में अकबर अली अंसारी व जंगबीर सिंह नेगी इस योजना को चला रहे हैं।

श्री अंसारी ने बताया कि सुबह 8.30 बजे समस्त ■ शेष पेज 9 पर...

रहा कोतवाली पुलिस का भी राजनीतिक दबाव सहकर

नौनिहाल थामेंगे मौसम...

आंकड़े एकत्र किए जाते हैं क्योंकि इसके बाद तापमान बढ़ना शुरू हो जाता है। चार तरह के थर्मामीटर से तापमान व आर्द्रता संबंधी आंकड़े लिए जाते हैं। एक 'मैक्सीमम थर्मामीटर' एक क्षैतिज पड़ा मर्करी थर्मामीटर होता है जो उच्चतम तापमान बताता है। एक 'मिनिमम थर्मामीटर' एक एल्कोहल थर्मामीटर होता है और यह न्यूनतम तापमान बताता है। 'विंड वेन' वायु की दिशा बताती है। इसको सामान्यतः भूमि के स्तर से 10 मीटर की ऊंचाई पर लगाया जाता है। वायु की तेजी को मापने के लिए 'एनीमोमीटर' का प्रयोग किया जाता है। 'ड्राई बल्ब थर्मामीटर' एक मर्करी थर्मामीटर होता है और परिवेशी वायु तापमान रिकार्ड करता है। 'वेट बल्ब थर्मामीटर' में बल्ब के आसपास मलमल के कपड़े का एक छोटा टुकड़ा बंधा हुआ होता है जिसे गीला रखा जाता है। सूखे तथा गीले बल्ब के तापमान के बीच अंतर वायु में गीलेपन व नमी से संबंध रखता है। 'रेन गॉज' का प्रयोग वर्षा को मापने के लिए किया जाता है।

आने वाले दिनों में तापमान के और गिरने की आशंका

शहर का तापमान आठ डिग्री तक गिरा

जागरण कार्यालय, रुड़की

पूरे उत्तर भारत में चल रही शीत लहर और कंपकंपा देने वाली ठंड का असर आज नगर में नजर आने लगा है। समय के साथ-साथ ठंड भी बढ़ने लगी है। आज पिछले एक सप्ताह का सर्वाधिक ठंडा दिन रहा जिसका प्रतिकूल प्रभाव सामान्य जन-जीवन पर भी रहा। आज सुबह न्यूनतम तापमान आठ डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। यद्यपि धूप निकलने के बाद लोगों ने चैन की सांस ली लेकिन आने वाले दिनों में तापमान में जबरदस्त गिरावट आने की उम्मीद है।

उत्तर भारत में शीत लहर का प्रकोप बढ़ रहा है। ठंड से अब तक एक दर्जन से अधिक मौतें हो चुकी हैं। इस बार सर्दी देर से शुरू होने के बाद ही विशेषज्ञों ने जबरदस्त ठंड होने की आशंका जता दी थी जो धीरे-धीरे सच साबित हो रही है। आमतौर से दीवाली के तुरंत बाद शुरू होने वाली सर्दी इस बार करीब एक माह देर से पड़ी, लेकिन बरसात के साथ शुरू हुई इस सर्दी में अब तेजी से इजाफा होना शुरू हो गया है। मैदानी इलाकों में रात करीब दस बजे से ही सड़कों पर धुंध आ जाती है जो सुबह करीब 11 बजे तक रहती है। पिछले एक सप्ताह से हालांकि धूप तो निकल रही है लेकिन बीच-बीच में बादल घिरने से ठंड में बढ़ोत्तरी भी हो रही है।

आज बुधवार, पिछले एक सप्ताह का सर्वाधिक ठंडा दिन, साबित हुआ। जब सुबह साढ़े आठ बजे न्यूनतम तापमान आठ डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। जबकि अधिकतम तापमान 19.5 डिग्री सेल्सियस रहा। राजकीय इंटर कालेज में स्थित मौसम वेधशाला से लिए गए आंकड़ों के अनुसार गत 16 दिसंबर को 11 मिलीमीटर वर्षा के बाद अचानक ही तापमान में गिरावट आई थी। बीच में दो दिन तापमान फिर भी ठीक रहा लेकिन फिर से तेजी से गिरा। 15 दिसंबर को न्यूनतम तापमान 14 व अधिकतम 29 डिग्री सेल्सियस रहा। 16 दिसंबर को न्यूनतम 13.9 व अधिकतम तापमान 23.5 डिग्री सैल्सियस रहा। 17 दिसंबर को न्यूनतम 11.5 व अधिकतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस रहा। 18 दिसंबर को भी तापमान लगभग यही रहा। 19 दिसंबर को न्यूनतम तापमान 9.8 तक पहुंच गया व अधिकतम तापमान 18 रहा। 20 व 21 दिसंबर को न्यूनतम तापमान 10.5 व अधिकतम तापमान 16 से 19 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। 22 दिसंबर को फिर मौसम ने करवट बदली और न्यूनतम तापमान 9 व अधिकतम तापमान 18.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया।

अब पिछले दो दिनों से फिर ठंड बढ़ने से तापमान में गिरावट आई है। कल, मंगलवार को न्यूनतम तापमान 9 डिग्री सेल्सियस था जो आज गिरकर आठ डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। आंकड़ों के अनुसार वायु रफ्तार आज 39 किमी प्रति घंटा रही। पिछले एक सप्ताह में अधिकांशतः उत्तर-पूर्वी हवाएं चली हैं लेकिन पिछले दो-दिनों से पश्चिम दिशा में हवा चल रही है। विशेषज्ञों के अनुसार आने वाले दिनों में तापमान में जबरदस्त गिरावट आएगी।

8/01/04

शीत लहर जारी, कोहरा व धुंध में कोई कमी नहीं

जागरण कार्यालय, रुड़की

भयंकर ठंड के चलते नगर में आज भी कोहरा व धुंध छायी रही। ठंड के चलते देहात क्षेत्र में आज भी दो लोगों की मौत का समाचार मिला है। आज सूर्य देवता ने नगर वासियों को दर्शन नहीं दिए तथा शीत लहर के चलते ठंड कम नहीं हो पायी।

कड़ाके की ठंड व शीत लहर निरंतर जारी है। शीत लहर के चलते पूरे दिन भयंकर ठंड रही। ठिठुरन के चलते आम जीवन अस्त व्यस्त रहा। रात को कोहरा व धुंध बरकरार रही। पिछले एक सप्ताह से चल रहा शीत लहर का प्रकोप आज और अधिक बढ़ गया। कोहरा व ओस के चलते नगर वासियों को सूर्य देवता के आज दर्शन नहीं हो पाए।

शीत लहर के चलते ठंड से मरने वालों की संख्या में आज भी इजाफा होने का समाचार मिला है किंतु अभी तक अधिकृत पुष्टि नहीं हो पायी है। मिली जानकारी के अनुसार भगवानपुर क्षेत्र में ठंड के चलते आज एक और बालिका की मृत्यु होने का समाचार मिला है जबकि नगर क्षेत्र में रेलवे स्टेशन पर ठंड के चलते एक वृद्ध की मौत का समाचार मिला है, हालांकि पुलिस व प्रशासन ने इसकी पुष्टि नहीं की। कड़ाके की ठंड आज भी जारी रही।

ठंड से दो और मौतों की चर्चा

ठंड ने अभी तक सभी रिकार्ड तोड़ते हुए लोगों को बुरी तरह से ठंडा कर दिया। आम जन जीवन अस्त-व्यस्त होकर रह गया है। राजकीय इंटर कालेज में लगे मौसम अनुसंधान केंद्र के पर्यवेक्षक जे.एस. नैगी ने बताया कि आज न्यूनतम तापमान 6 डिग्री सेल्सियस पर आ गया जबकि अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया व आर्द्रता 78 प्रतिशत दर्ज हुई, जिससे ठंड का अंदाजा स्वयं ही लगाया जा सकता है। सुबह व रात को पड़ रहे कोहरे के चलते लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। तेज व ठंडी हवाओं के कारण बाहर निकले लोग ठिठुरते नजर आए।

मौसम का सर्वाधिक सर्द दिन रहा आज

जागरण कार्यालय, रुड़की

कड़ाके की ठंड व शीतलहर के चलते आज न्यूनतम तापमान काफी नीचे आ गया। अप्रत्याशित रूप से काफी नीचे गिरा तापमान आज 2.4 डिग्री सेंटीग्रेड रिकार्ड किया गया। पिछले एक सप्ताह से चल रहा शीतलहर का प्रकोप आज और अधिक बढ़ गया। कोहरा व ओस के चलते नगरवासियों को सूर्य देवता के आज भी दर्शन नहीं हो पाए। ठंड से मरने वालों की संख्या में आज भी इजाफा होने का समाचार मिला है किंतु अभी तक अधिकृत पुष्टि नहीं हो पायी है। कड़ाके की ठंड आज भी जारी रही। ठंड ने अभी तक सभी रिकार्ड तोड़ते हुए लोगों को बुरी तरह से ठंडा कर दिया। नगरवासियों ने नववर्ष का स्वागत ठिठुरन से किया। तापमान लगातार नीचे जा रहा है। आम जनजीवन अस्त-व्यस्त होकर रह गया है। पिछले तीन दिनों से लोगों को सूर्य देव के दर्शन नहीं हो पाए हैं। पूरे दिन सूर्य भगवान के दर्शन न होने से जहां एक तरफ लोग काफी बेचैन दिखाई पड़े, वही दूसरी तरफ ऐसी कड़ाके की ठंड में सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। बाजारों में भी सुबह से सन्नाटा छाया रहा।

- कड़ाके की ठंड जारी
- तापमान 2.4 डिग्री दर्ज
- तापमान और गिरने की संभावना

राजकीय इंटर कालेज में लगे मौसम अनुसंधान केंद्र के पर्यवेक्षक जे.एस. नेगी ने बताया कि आज न्यूनतम तापमान गिरकर 2.4 डिग्री सेल्सियस पर आ गया जबकि अधिकतम तापमान 10.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया व आर्द्रता 92 प्रतिशत दर्ज हुई, जिससे ठंड का अंदाजा स्वयं ही लगाया जा सकता है। कल न्यूनतम तापमान 5.6 डिग्री सेल्सियस पर था। श्री नेगी के अनुसार न्यूनतम तापमान अभी और नीचे जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है। इस ठंड में सबसे अधिक परेशानी का सामना स्कूल जाने वाले बच्चों को करना पड़ रहा है। हालांकि जिलाधिकारी एस.के. माहेश्वरी ने जनपद के सभी स्कूलों को बंद करने के आदेश दे दिए हैं लेकिन आज भी कुछ स्कूल इस आदेश की अवहेलना करते हुए खुले रहे। जिलाधिकारी के आदेश के बावजूद स्कूल खुले रहने पर अभिभावकों में जबरदस्त रोष रहा। प्रधानाचार्यों का कहना था कि उनके पास जिलाधिकारी के आदेश नहीं आए हैं इसलिए स्कूल बंद नहीं रहा।

कड़कड़ाती ठंड से लोग बेहाल हुए

तापमान आठ डिग्री सेल्सियस तक पहुंचा, ठंड का प्रकोप बढ़ा

स्टाफ रिपोर्टर

रुड़की। पहाड़ी क्षेत्र और गंगनहर के किनारे बसे रुड़की तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों में इस समय ठंड का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है। धूप कभी निकल रही है, तो कभी दो दिनों तक सूरज के दर्शन भी नहीं हो रहे हैं। अक्सर ऐसा भी हो रहा है कि पूरा दिन गुजर जाने के बाद शाम को डूबने से कुछ देर पहले ही सूरज महाराज दिखाई पड़ रहे हैं। पिछले पंद्रह दिनों में रुड़की के मौसम में काफी उतार चढ़ाव आए हैं। पंद्रह से चौबीस दिसंबर के बीच रुड़की तथा उसके आसपास के क्षेत्रों का सबसे कम तापमान बुधवार 24 दिसंबर को आठ डिग्री सेल्सियस रहा। यह तापमान इस वर्ष सर्दी में अब तक का सबसे कम तापमान है। अब तक का सबसे अधिक तापमान 29 डिग्री सेल्सियस पंद्रह दिसंबर को रहा।

पिछले पंद्रह दिनों में रुड़की के मौसम में काफी उतार चढ़ाव आए

स्थानीय राजकीय इंटर कालेज में स्थापित मौसम सूचकांक के अनुसार इस पूरे महीने यहां के मौसम के तापमान में उतार चढ़ाव जारी रहेगा। पिछले दस दिनों के अंदर रिकार्ड की गई सबसे कम सापेक्ष आर्द्रता चालीस प्रतिशत सत्रह दिसंबर को रही। इसी तरह सर्वाधिक आर्द्रता 88 प्रतिशत उन्नीस दिसंबर को रही। कालेज के मौसम विभाग से मिली जानकारी के अनुसार दस दिनों की इस ठंड से नगर तथा गांव वालों को कंपाने के लिए हवाओं ने भी अपना जलवा दिखाया। इन अंतराल में हवाओं का रुख रोजाना बदलता ही रहा, जिसमें पछुवा हवा ने सबसे अधिक गलन पैदा की। बुधवार को आधी रात के बाद से ही पछुवा हवा की रफ्तार 4/2 किलोमीटर प्रति घंटा रही। यह रफ्तार इन दस दिनों की सबसे तेज है। इससे पहले दिन 23 दिसंबर को हवा की रफ्तार 2/1 किलोमीटर प्रतिघंटा रही, लेकिन इसका रुख दक्षिण से पश्चिम की ओर रहा। इस दिन न्यूनतम तापमान 11.4 डिग्री सेल्सियस रहा। इसके अलावा हवाओं का रुख कभी उत्तर से पूर्व, दक्षिण से पूर्व तथा उत्तर से पश्चिम की ओर रहा। जानकारी के अनुसार पछुवा हवा बुधवार को पहली बार चली और तापमान के पारे को सबसे नीचे धकेल दिया। मौसम विभाग द्वारा लिए गए इन आंकड़ों में बारिश सिर्फ एक दिन सोलह दिसंबर को हुई थी, जो 11 मिली मीटर रही। इस बीच नगर तथा ग्रामीण इलाकों में बढ़ रही ठंड से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है।

आपदाओं से निपटने को मुहिम शुरू

प्रदेश में पर्यावरण शिक्षा के प्रयोग से अन्य प्रदेशों को भी लाभ

अमर उजाला

रविंद्र बड़थ्वाल, 26.1.02

देहरादून। उत्तरांचल में छात्र-छात्राओं को विज्ञान के व्यावहारिक प्रयोग के रूप में मौसम की जानकारी देकर प्राकृतिक आपदाओं के पूर्वानुमान व उससे निपटने के लिए तैयार करने की मुहिम को पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू किया जा रहा है। केंद्र सरकार की इस पहल से प्राप्त नतीजों का विश्लेषण करने के बाद अन्य हिमालयी प्रदेशों में इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के क्रियान्वयन के रास्ते खुलेंगे।

उत्तरांचल में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम का अंग बनाने की कवायद के साथ ही राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की ओर से पाठ्यक्रम से इतर इसे व्यावहारिक स्वरूप देने की पहल की है। ग्लोब परियोजना के बाद यू प्रोब (उत्तरांचल पार्टीसिपेशन ऑफ यूथ इन रियलाइजिंग आब्जर्वेशंस टू बेनिफिट द एजुकेशन) परियोजना के लिए उत्तरांचल को चुने जाने के बाद प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के स्तरों पर भविष्य में शिक्षा को व्यावहारिक व गुणवत्तायुक्त बनाने के रास्ते खुलते नजर आ रहे हैं। उल्लेखनीय है कि अमेरिकी संस्था ग्लोब ने प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को पर्यावरण शिक्षा की वैश्विक मुहिम में देश के चुनिंदा राज्यों में उत्तरांचल को शामिल किया है। इसके माध्यम से सौ विद्यालयों में कक्षा छह से आठ तक बच्चों को अपने परिवेश, जलवायु, भूमि, जल, वायु की प्रकृति का अध्ययन कराया जाएगा। गढ़वाल व कुमाऊं मंडलों में संबंधित विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर उक्त परियोजना की शुरुआत कर दी गई है।

देहरादून, हरिद्वार व उत्तरकाशी जिलों के लिए रुड़की विश्वविद्यालय, पौड़ी, रुद्रप्रयाग, टिहरी व चमोली जिलों के लिए गढ़वाल विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा व पिथौरागढ़ जिलों के लिए विवेकानंद पर्वतीय अनुसंधानशाला, उधमसिंह नगर व चंपावत जिलों के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय और नैनीताल व बागेश्वर जिलों के लिए कुमाऊं विश्वविद्यालय को नोडल एजेंसी बनाया गया है। उक्त विद्यालयों के शिक्षकों को आईआईटी दिल्ली, उत्तरांचल सरकार व सीईई, अहमदाबाद के सौजन्य से प्रशिक्षण दिया जाएगा। राष्ट्रीय सूचना केंद्र (एनआईसी) विद्यालयों में कंप्यूटर के इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षण देगा।

शिक्षा निदेशक महेशचंद्र पंत ने बताया कि दो दिवसीय कार्यशाला में यू प्रोब कार्यक्रम के क्रियान्वयन की रूपरेखा बनाई गई। राज्य के सौ माध्यमिक विद्यालयों में इस कार्यक्रम को शुरू किया जाएगा। पहले चरण में दस विद्यालयों का चयन कर लिया गया है।

इनमें राजकीय इंटर कालेज, रुड़की, घनानंद इंटर कालेज, मसूरी, नवोदय विद्यालय टिहरी, राजकीय इंटर कालेज, श्रीनगर, राजकीय इंटर कालेज अगस्त्यमुनि, राजकीय इंटर कालेज शांतिपुरी, ऊधमसिंहनगर, राजकीय इंटर कालेज टनकपुर, चंपावत, राजकीय इंटर कालेज, अल्मोड़ा, राजकीय इंटर कालेज, पिथौरागढ़ व राजकीय इंटर कालेज, नैनीताल शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 15 जनवरी तक उक्त विद्यालयों में उपकरण लगाने की योजना है। राजधानी में उक्त जिलों के लिए पूना से उपकरण पहुंच चुके हैं। एक साल के भीतर समस्त विद्यालयों में उपकरणों की व्यवस्था कर दी जाएगी। प्रदेश में उक्त कार्यक्रम की प्रगति को देखकर अन्य हिमालयी प्रदेशों में भी इसे लागू करने की केंद्र सरकार की योजना है।

கடலோர பள்ளி மாணவர், ஆசிரியருக்கு வானிலை கல்வி

திருச்செந்தூர், ஜன.31: கடலோர பள்ளி மாணவர்கள், ஆசிரியர்களுக்கு வானிலை மற்றும் சுற்றுச் சூழல் கல்வியை கற்று கொடுக்கும் திட்டம் நெல்லை, தூத்துக்குடி, கன்னியாகுமரி மாவட்டங்களில் துவங்கப்பட்டுள்ளது.

நெல்லை, தூத்துக்குடி, கன்னியாகுமரி மாவட்டங்களில் கடலோர பகுதிகளை சேர்ந்த 16 பள்ளிகள் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்டு அந்த பள்ளிகளிலிருந்து தலா ஒரு மாணவர், ஒரு ஆசிரியருக்கு வானிலை கல்வி குறித்தும், வானிலை கருவிகளை இயக்குவது குறித்தும் பயிற்சி அளிக்கும் மூன்று நாள் கருத்துப்பட்டறை திருச்செந்தூர் கல்லூரியில் நேற்று துவங்கியது. இது பிப்ரவரி 1ம்தேதி வரை நடக்கிறது.

இங்கு சிறப்பு பயிற்சி பெறும் மாணவர்கள் மற்றும் ஆசிரியர்கள் மூலம் அவர்கள் சார்ந்த பள்ளிகளில் வானிலை கல்வி கற்பிக்கப்பட உள்ளது. பின்னர் அந்த வட்டாரத்தில் வசிக்கும் மீனவர்களுக்கு பள்ளி மாணவர்கள், ஆசிரியர்கள் மூலம் வானிலை கல்வி குறித்தும், வானிலை கருவிகளை இயக்குவது குறித்தும் பயிற்சி அளிக்கப்பட இருக்கிறது. இதற்காக குறிப்பிட்ட 16 பள்ளிகளில் வானிலையை துல்லியமாக கண்டறியும் கருவிகள், கம்ப்யூட்டர் வசதி ஆகியவை செய்து கொடுக்கப்பட்டுள்ளன. வருங்காலத்தில், மீனவர்களுக்கு சிறிய அளவிலான வானிலை கண்டறியும் கருவிகளை கொடுத்து அவர்கள் அனுப்பும் தகவல் மூலம் அந்தந்த பகுதிகளின் வானிலையை துல்லியமாக கண்டறியவும் திட்டம் தீட்டப்பட்டு உள்ளது.

திருச்செந்தூர் கல்லூரியில் நேற்று நடந்த கருத்துப்பட்டறை துவக்க விழாவில் கல்லூரி முதல்வர் செல்வராஜ் வரவேற்றார். மத்திய அறிவியல் மற்றும் தொழில்நுட்ப துறையின் ஆலோசகர் டாக்டர் மால்டிகோயல் சிறப்பு விருந்தினராக கலந்து கொண்டு பேசினார். அவர் பேசுகையில், தொடர்ந்து வானிலையை கண்காணித்து வந்தால்தான் நம்மால் உறுதியான வானிலை முன்அறிவிப்பை கொடுக்க முடியும். காற்றின் வேகம், திசை போன்றவைகளை செயற்கைகோள் துணையுடன் நாம் தற்போது அறிந்து வருகிறோம்.

தட்ப வெப்பவியல் மற்றும் சுற்றுச்சூழல் குறித்த ஆய்வகத்தை ராதிகா செல்வி எம்.பி. பார்வையிட்டார். உடன் மத்திய அறிவியல் தொழில்நுட்ப அதிகாரி டாக்டர் மல்டி கோயல்.

இது சில சமயங்களில் மாறுபடக்கூடும். ஆகையால துல்லியமான வானிலையை தெரிந்து கொள்ள மீனவர்களின் கையிலேயே வானிலையை ஆராயும் கருவியை கொடுத்து அந்தந்த பகுதிகளில் நிலவும் வானிலையை மின்அஞ்சல் மூலமாக உடலுக்குடன் மத்திய கட்டுப்பாட்டு அறைக்கு அனுப்பி சரியான வானிலை தகவலை இந்த திட்டத்தின் மூலம் தெரிந்து கொள்ள முடியும் என்றார்.

கருத்துப்பட்டறையை துவக்கி வைத்து பேசிய ராதிகா செல்வி எம்.பி, இது ஒரு நல்ல திட்டமாகும். இதியாவிலேயே இரண்டாவதாக இந்த திட்டம் திருச்செந்தூரில் செயல்படுத்தப்பட இருக்கிறது.

முதலாவதாக உதகராஜ்சல் மாநிலத்தில் மலைப்பகுதிகளில் உள்ள தட்பவெட்ப நிலையை அறிய இந்த திட்டம் செயல்படுத்தப்பட்டது. கடலோரங்களில் இதுபோன்ற வானிலை தகவல் அறியும் கருவியை அந்தந்த பகுதிகளிலேயே செயல்பட வைப்பது இது முதல்முறையாகும். மீனவர்களுக்கு இது மிகவும் பயனுள்ளதாக இருக்கும் என்றார்.

கோட்டார் மறைமாவட்டத்தை சேர்ந்த ஆர்சி பள்ளிகளின் இயக்குநர் செல்வராஜ், தூத்துக்குடி மறை மாவட்டத்தை சேர்ந்த ஆர்சி பள்ளிகளின் சூப்பிரண்டண்ட் சேவியர் மரியம், கல்லூரி செயலர் உத்திர பாண்டியன் ஆகியோர் பேசினர். இயற்பியல் துறை தலைவர் மாதவன் நன்றி கூறினார்.

முன்னதாக காலையில் நடந்த விழாவில் சென்னை தட்பவெட்ப நிலைத்துறை இயக்குநர் பாலச்சந்திரன் பேசினார். பின்னர் திருச்செந்தூர் சங்கரா மெட்ரிக்குலேசன் மேல்நிலைப்பள்ளியில் அமைந்துள்ள வானிலை கண்காணிப்பு மையத்தை மாணவர்கள் சென்று பார்வையிட்டனர்.

Printed and Published by R.N.Murugan, on behalf of Kal Publications Pvt. Ltd. at Dinakaran Press, No 128/3, 126/4A (Old No.3A) South Bye-Pass Road, Vannarpettai, Tirunelveli - 627 003. Editor : R.N.M

Dinakaran. dated 31.1.2007